ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

क्रांति के अग्रदूत 'माखनलाल चतुर्वेदी'

S. Shafi Haider Amil

Associate Professor, Department of Hindi, Shia PG College, Lucknow, India

सार

माखनलाल चतुर्वेदी (4 अप्रैल 1889-30 जनवरी 1968) भारत के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार थे जिनकी रचनाएँ अत्यंत लोकप्रिय हुईं। सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के वे अनूठे हिंदी रचनाकार थे। प्रभा और कर्मवीर जैसे प्रतिष्ठत पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया और नई पीढ़ी का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंज़ीरों को तोड़ कर बाहर आए। इसके लिये उन्हें अनेक बार ब्रिटिश साम्राज्य का कोपभाजन बनना पड़ा। वे सच्चे देशप्रेमी थे और १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। उनकी कविताओं में देशप्रेम के साथ-साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है। ब्राउन युनिवर्सिटी अमेरिका में अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन, समाज विज्ञान एवं राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर, जाने-माने राजनीति विज्ञानी और स्तंभकार आशुतोष वार्ष्णेय ने माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल में सोमवार को मीडिया शिक्षकों के साथ संसदीय लोकतंत्र और संविधान विषय पर व्याख्यान दिया। प्रो. आशुतोष ने कहा कि चुनाव के बिना लोकतंत्र नहीं चलता परंतु चुनाव ही लोकतंत्र नहीं चलाता है, यह हमें समझना होगा। श्री माखनलाल चतुर्वेदी का जन्म मध्य प्रदेश के होशंगाबाद(नर्मदापुरम) जिले में बाबई (माखन नगर) नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। प्राइमरी शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बांग्ला , अंग्रेजी, गुजराती आदि भाषाओँ का ज्ञान प्राप्त किया।

मुख्य शब्द: क्रांति, अग्रदूत, 'माखनलाल चतुर्वेदी', राष्ट्रीय पत्रकारिता, अहिंसक, राजनीति, सरकार

परिचय

माखनलाल चतुर्वेदी का तत्कालीन राष्ट्रीय परिदृश्य और घटनाचक्र ऐसा था जब लोकमान्य तिलक का उद्घोष- 'स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' बलिपंथियों का प्रेरणास्रोत बन चुका था। दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के अमोघ अस्त्र का सफल प्रयोग कर कर्मवीर मोहनदास करमचंद गाँधी का राष्ट्रीय परिदृश्य के केंद्र में आगमन हो चुका था। आर्थिक स्वतंत्रता के लिए स्वदेशी का मार्ग चुना गया था, सामाजिक सुधार के अभियान गतिशील थे और राजनीतिक चेतना स्वतंत्रता की चाह के रूप में सर्वोच्च प्राथमिकता बन गई थी। ऐसे समय में माधवराव सप्रे के 'हिन्दी केसरी' ने सन १९०८ में 'राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। खंडवा के युवा अध्यापक माखनलाल चतुर्वेदी का निबंध प्रथम चुना गया। अप्रैल १९१३ में खंडवा के हिन्दी सेवी कालूराम गंगराड़े ने मासिक पत्रिका 'प्रभा' का प्रकाशन आरंभ किया, जिसके संपादन का दायित्व माखनलालजी को सौंपा गया। सितंबर १९१३ में उन्होंने अध्यापक की नौकरी छोड़ दी और पूरी तरह पत्रकारिता, साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के लिए समर्पित हो गए। इसी वर्ष कानपुर से गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' का संपादन-प्रकाशन आरंभ किया। १९१६ के लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के दौरान माखनलालजी ने विद्यार्थीजी के साथ मैथिलीशरण गुप्त और महात्मा गाँधी से मुलाकात की। महात्मा गाँधी द्वारा आहूत सन १९२० के 'असहयोग आंदोलन' में महाकोशल अंचल से पहली गिरफ्तारी देने वाले माखनलालजी ही थे। सन १९३० के सविनय अवज्ञा आंदोलन में भी उन्हें गिरफ्तारी देने का प्रथम सम्मान मिला। उनके महान कृतित्व के तीन आयाम हैं : एक, पत्रकारिता- 'प्रभा', 'कर्मवीर' और 'प्रताप' का संपादन। दो- माखनलालजी की कविताएँ, निबंध, नाटक और कहानी। तीन- माखनलालजी के अभिभाषण/ व्याख्यान।[1,2]

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

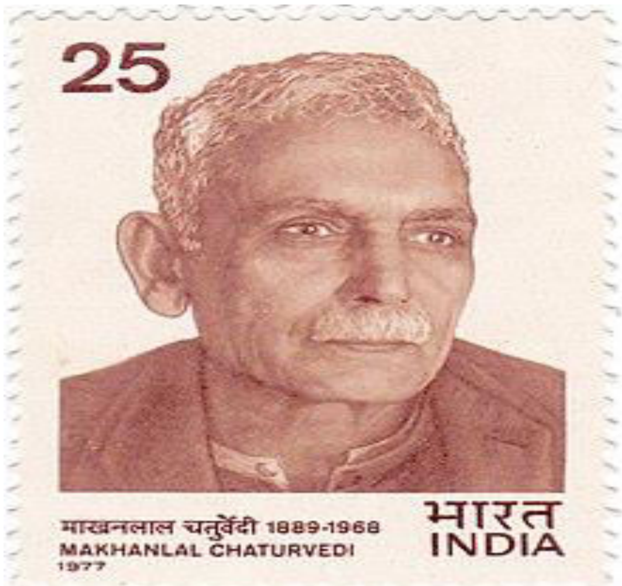

१९४३ में उस समय का हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। १९५४ में साहित्य अकादमी पुरस्कार की स्थापना होने पर हिन्दी साहित्य के लिए प्रथम पुरस्कार दादा को 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। 'पुष्प की अभिलाषा' और 'अमर राष्ट्र' जैसी ओजस्वी रचनाओं के रचयिता इस महाकवि के कृतित्व को सागर विश्वविद्यालय ने १९५९ में डी.लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया। १९६३ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। १० सितंबर १९६७ को राजभाषा हिन्दी पर आघात करने वाले राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलालजी ने यह अलंकरण लौटा दिया। १६-१७ जनवरी १९६५ को मध्यप्रदेश शासन की ओर से खंडवा में 'एक भारतीय आत्मा' माखनलाल चतुर्वेदी के नागरिक सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। तत्कालीन राज्यपाल श्री हरि विनायक पाटसकर और मुख्यमंत्री पं० द्वारकाप्रसाद मिश्र तथा हिन्दी के अग्रगण्य साहित्यकार-पत्रकार इस गरिमामय समारोह में उपस्थित थे। भोपाल का माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय उन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया है। उनके काव्य संग्रह 'हिमतरंगिणी' के लिये उन्हें १९५५ में हिन्दी के 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं।कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पांव, अमीर इरादे :गरीब इरादे आदि इनके प्रसिद्ध गद्यात्मक कृतियाँ हैं।

हिंदी साहित्य को उनके दिए गए योगदान के कारण माखनलाल चतुर्वेदी के सम्मान में बहुत सी यूनिवर्सिटी ने विविध अवार्ड्स के नाम उनके नाम पर रखे हैं. मध्य प्रदेश सांस्कृतिक काउंसिल द्वारा नियंत्रित मध्य प्रदेश साहित्य अकादमी देश की किसी भी भाषा में योग्य कवियों को "माखनलाल चतुर्वेदी पुरस्कार" देती हैं. [3,4] पंडितजी के देहांत के 19 वर्ष बाद 1987 से यह सम्मान देना शुरू किया गया.

भोपाल, मध्य प्रदेश में स्थित माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय पूरे एशिया में अपने प्रकार का पहला विश्व विद्यालय हैं. इसकी स्थापना माखनलाल चतुर्वेदी जी के राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता और लेखन के द्वारा दिए योगदान को सम्मान देते हुए 1991 में हुई. भारत के पोस्ट और टेलीग्राफ डिपार्टमेंट ने भी पंडित माखन लाल चतुर्वेदी को सम्मान देते हुए पोस्टेज स्टाम्प की शुरुआत की. यह स्टाम्प पंडितजी के 88वें जन्मदिन 4 अप्रैल 1977 को ज़ारी किया गया था. [5,6] पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का नाम छायावाद की उन हस्तियों में से है जिनके कारण वह युग विशेष हो गया। उस युग के कवि कुदरत को स्वयं के करीब महसूस कर लिखा करते थे। चतुर्वेदी जी की भी कई रचनाएं ऐसी हैं जहां उन्होंने प्रकृति के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। उनकी रचना पुष्प की अभिलाषा और फूल की मनुहार में उन्होंने एक कुसुम के द्वारा अपनी आंतरित संवेदनाओं को प्रकट किया है जिससे संकेत मिलता है कि वह एक राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति होने के साथ-साथ अपनत्व से आप्लावित व्यक्ति भी थे।

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

विचार-विमर्श

उनकी भाषा सरल और ओजपूर्ण है । प्रभा और कर्मवीर पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ जोरदार प्रचार किया । १९२१-२२ के असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेते हुए जेल भी गए। आपकी कविताओं में देशप्रेम के साथ साथ प्रकृति और प्रेम का भी चित्रण हुआ है। १९४३ में हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा 'देव पुरस्कार' माखनलालजी को 'हिम किरीटिनी' पर दिया गया था। १९५५ में साहित्य अकादमी पुरस्कार 'हिमतरंगिनी' के लिए प्रदान किया गया। १९६३ में भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया। उनकी काव्य कृतियाँ: हिमकिरीटिनी, हिम तरंगिणी, युग चरण, समर्पण, मरण ज्वार, माता, वेणु लो गूंजे धरा, बीजुरी काजल आँज रही, धूम्र वलय आदि और गद्यात्मक कृतियाँ: कृष्णार्जुन युद्ध, साहित्य के देवता, समय के पांव, अमीर इरादे:गरीब इरादे आदि हैं।

1. कोमलतर वन्दीखाना

'शंकर' थी; अब कारागृह है हिमगिरि की दीवार,
हाय गले का तौक बना गंगा-यमुना का हार;
धन्य ! बंग खंभात अब्धि की लहरों की हथकड़ियां,
रामेश्वर पर चढ़ी तरंगें बनी पैर की कड़ियाँ ।
कोमलतर बन्दीखाने के तीस कोटि बन्दी हैं
हों गुलाम, जीवन की बेहोशी में आनंदी हैं ।
(1923, माता)

2. राष्ट्रीय झंडे की भेंट

माँ, रोवो मत, शीघ्र लौट घर आऊँगा, प्रस्थान करूँ
बाबा दो आशीष, पताका पर सब कुछ क़ुरबान करूँ।
लौटूँगा मैं देवी, हाथ में विजय पताका लाऊंगा।
कष्ट-प्रवास, जेल-जीवन की तुमको कथा सुनाऊँगा।

दौड़ पड़ो वीरो, माता ने संकट में की आज पुकार।
हार न होवे तेरे रहते मेरी पावन भूमि बिहार।
ले झण्डा चल पड़ा, प्राण का मोह छोड़ वह तरुण युवा।
उसकी गति पर अहा ! देश के अमरों को भी क्षोभ हुआ ।

सजा हुई, जंजीरें पहनीं, दुर्बल था, पर वार हुए,
गिट्टी, मोट, चक्कियाँ, कोल्हू हँस-हँस कर स्वीकार हुए।
'मातृ-भूमि' मैं तेरी मूरत देख सभी सह जाऊँगा।
दे लें दण्ड, आर्य-बालक हूँ, मस्तक नहीं झुकाऊँगा।

कष्ट बढ़े, दुर्बल देही थी असहनीय व्यवहार हुआ,
कैदी शैय्या पर पड़ने को गिर-पड़ कर लाचार हुआ,
सेनापति ने कहा, पताके ! अभी कौन बलिहार हुआ?
हुंकारा हरदेव, प्राण मैं दूँगा, लो तैयार हुआ।

"माफ़ी ले लो, अभी समय है," अरे न यों अपमान करो,
झण्डे पर चढ़ने दो मुझको मातृभूमि का ध्यान करो!
प्यारी माँ, मेरे बाबा-हरदेवा अन्तर्धान हुआ।

रक्षक हा भगवान प्रिये, मैं झण्डे पर क़ुरबान हुआ।

जननी बिहार प्रणाम तुम्हें, तेरे गौरव का गान रहे,
मातृभूमि ! तेरे ध्वज की मेरे प्राणों से शान रहे !
क्यों सहसा चल पड़ा? ठहर, आ रही विजय तेरे द्वारे।
'कंधे पर ले चलें' या कि चल पड़ें पूज्य पथ में प्यारे ।

(सितम्बर,1923; हरदेव=श्री हरदेव नारायण सिंह;
बिहार के सत्याग्रही 1923 में नागपुर के
झंडा-सत्याग्रह में आये हुए थे। जिस दिन
अखिल भारतीय राष्ट्र समिति के प्रतिनिधि
सरदार पटेल ने नागपुर की सभा में भाषण
दिया की आज तक कोई झंडे पर मरा नहीं,
उसी समय नागपुर जेल में हरदेव प्राण दे
रहे थे । सरदार पटेल, माखन लाल चतुर्वेदी
और अन्य देशभक्तों के कंधे पर झंडे का कफ़न
ओढ़े, हरदेव नारायण की अर्थी सहस्त्रों की जनता
के साथ निकली और सुनहला इतिहास बना गयी ।
कविता 'राष्ट्रीय झण्डे की भेंट' ;कवि ने उनके
अंतिम संस्कार के बाद लिखी थी)

3. लौटे
वह आता है किये निहाल, गर्व से उठाये भाल
पुष्प भूमि ह्दय संभाले पथ में खड़ी;

अब जाता है हमारा शोक क्यों कर रहेगी रोक
दीन दुखी लोगों की अनी सी उमड़ी बड़ी;

सभी खीझने खिजाने और रीझने रिझाने वाले
प्रेमियों की सेना पद पूजते हुए अड़ी,

देवि, सास को सहारा दिये बालकों को गोदी लिये-
चूम, द्वार-झांकती लगाये आंसूयों की झड़ी !

(1924: फतहपुर के मुकदमे की सजा काट कर
स्व० भाई गणेश-शंकरजी के नैनी जेल से छूटने पर)

4. वह संकट पर झूल रहा है
कांटों ने संकेत दिया था शीघ्र पुष्प आने वाले हैं
सागर के वे ज्वार, तुम्हारे घर मोती लाने वाले हैं
पंखिनियाँ, प्रभु की ऊंचाई का, प्राणों में गान करेंगी;
आँसू की बूंदों से, साधें सिमिट-सिमिट पहिचान करेंगी ।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

अग-जग में जो ढूंढ़ रहा हूँ वह सांसों पर फूल रहा है;
चाहा था नजरों पर झूलें वह संकट पर झूल रहा है।
एक हिलोर, लोरियाँ गाकर जाना था, गुमराह कर उठी,
किसने जाना था प्रहार की बेला उस पर वाह कर उठी !

जो तड़पन सा उठा, और आँसू सा बेकाबू भर आया,
जी से आँखों पर गालों पर अंगुलियों पर गीत सजाया;
जिसके जी से संकट खेले संकट से जो रह-रह खेला,
संकट के पुष्पक पर आई जिसकी पुण्य-साध की वेला!

जिसके पागलपन में एक प्रणयिनी वंदन की हलचल है,
जिसके पागलपन में, प्रतिभा के सौ-सौ हाथी का बल है,
जिसके पागलपन में, बलि पथ में भी मधुर ज्वार आता है,
अपने पागलपन में, बेदी पर शिर जो उतार आता है !

उसकी याद-याद पर, होती रहे याद कुरबान हमारी,
उसकी साँस-साँस में, कसकें--'महासांस' की 'साँसें' सारी ।
वह आँखों का मीठा धन यादों का मीठा मोहन प्यारा,
वह अरमानों का अपनापन जी की कसकों की ध्वनि-धारा ।

वह मेरे संकोचों के आँगन का शिशु, अनहोना सा धन,
वह मेरे मनसूवों की सीमा-रेखा का निर्मल यौवन,
वह बलि की बेदाग तरुण कलिका, प्रभु-तरु के चरणों झुक-झुक;
करती रहे युगों को, अपनी मृदु मरंद से युग-युग उत्सुक ।
(1926)

5. विदा
जाग रही थी,
चैन न लेती थी
मस्तानी आँखडियां,
पहरा देती थीं
पागल हो, ये---
पागलिनी पाँखडियाँ,
भौहें सावधान थीं
ओठों ने भूला
था मुसकाना,
आह न करती
डरती थी, पथ-
पाले कोई दीवाना !
सूरज की सौ-सौ किरणों में, विमल वायु के बहते,
कौन छीन ले गया मुझे अपने से, जागृत रहते ?
(1926)

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

6. सेनानी

तुझको लख युग मुख खोल उठा, बेबस तब स्वर में बोल उठा,
तेरा जब प्रलय-गान निकला, ले, कोटि-कोटि शिर डोल उठा ।
आशा ऊषा यह द्वार खोज विजया, का सोना ले आई !
यह भली जगा दी तरुणाई !

माँ का 'उभार' खोलती सी, जीवन में ज्वर घोलती सी,
विष-घट खाली कर अमृत में घट-घट भर, मस्त डोलती सी,
जी की ज्वाला की दीप-माल आरती बनाकर ले आई,
यह भली जगा दी तरुणाई !

तू बल दे गिरतों को उदार, तू बल दे बलि-पथ को संवार,
तू बल दे मस्तक वालों को- मस्तक देने का स्वर उचार,
जगमग-जगमग उल्लास जगा दीपों में साध उतर आई ।
यह भली जगा दी तरुणाई !

तेरे स्वर पर प्रभु है लहरा, तेरे स्वर पर सुहाग ठहरा,
तेरा स्वर वह गहरा-गहरा, तेरे स्वर पर युग का पहरा,
तू महाप्राण, तू प्रलय गान, तू अमर प्राण, तू बलि महान;
तू मेरे अमर ! उठा वंशी दे फूंक साधना स्वर भाई ।

यह भली जगा दी तरुणाई !
(1927)

7. मीर

दे प्यारे, अपनी आँखों में
आमेजान वहाँ पाऊँ,
विमल-धर्म-जयगढ़ पर
तेरे उसे समुद्र टकरा पाऊँ
भाव-पोत पर लाद, प्रेम के
पुष्प-पत्र पहुँचा पाऊँ;
अपनी क्षीण धार, उस निधि से
किसी प्रकार मिला पाऊँ;
उद्गम पर इस ओर खड़ा है
बल, विचार-गुणहीन फकीर
मजलिस सुनी देख, विकल है,
उसे मिला दे उसका मीर ।
(1927; मीर=हिन्दी के सुकवि स्वर्गीय
सैयद अमीर अली मीर, जिन्हें लेखक
जीवन भर 'पूज्य' और 'पंडित' अमीर
अली मीर लिखता रहा । लेखक के
(सन 1921 की 5 जुलाई को) जेल

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

जाने पर, धर्मजयगढ़ के दीवान होते हुए, मीर साहब ने बधाई का पत्र बिलासपुर जेल के पते पर अपने कैदी मित्र को भेजा। उस समय 'मीर' साहब को भेजी गई यह श्रद्धांजलि है। जेल से लौटने पर पता चला कि मीर साहब अपने राष्ट्रीय मनोभावों के कारण उस राज के दीवान पद से हटा दिये गये)

8. अमरते ! कहाँ से ?

अमरते आई दौड़ कहाँ से ।
यह यौवन, यह उभरन आली
छीनी कैसे माँ से !
अमरते

पलकें बिह्वल
प्रहर प्रतीक्षक
दिन दीवाने कैसे ?
मास मनाने
लगे, रूठकर
बैठी हूँ मैं जैसे ?
अमरते

माँ के घर-
रहना ही होगा
करके कठिन मजूरी,
मोहन देते
नहीं अभी
अपने घर की मंजूरी !
अमरते

तोड़ूंगी हिम-
शैल, बनाऊंगी-
पगडंडी पथ में !
विजय घोष
कर बैठेगा-
यौवन, झंझा के रथ में !
अमरते

जब आँखों से
दीख पड़ेगा

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

वह उन्मत्त जमाना
परम सुनहला
बन्ध मुक्त-
बल-वैभव का दीवाना !
अमरते

उदधि-जाधौत
चरणों पर अर्पित--
कोटि कोटि जयमाला,
कोटि कोटि
थाली जगमग की
मना रही दीवाली ।
अमरते

बैठे, चलो
समय के रथ--
किरनीली ज्योति जगा दें
और आत्म-मंथन
का कल-कल
ऊषा बनकर गा दें ।
अमरते

निर्झर, खंडहर,
तरु-कोटर में
गूंथा किसने स्वर है ?
मर्मर अमर-
अमर का गाना
सखि ! यह कौन अमर है?
अमरते

(1927)

9. उच्चत्व से पतन स्वीकार था !

मनहर, पतन स्वीकार था
मुझको, पतन स्वीकार था!
हे हिमशिखर !
तुमको लगा जो निम्न पथ,
मेरे लिए हर-द्वार था।
मुझको, पतन स्वीकार था!

मेरा उतरना, दौड़ना, पथ-पत्थरों का तोड़ना
कर हरी-हरी वसुंधरा उदंड अंग हिलोरना!

ये राह, खोवे दाह, गीता में प्रलय, तरला चाह,
मैं चल पड़ी, मेरे चरणों पर जगत भर लाचार था !
मुझको, पतन स्वीकार था!

प्रभु की तरल प्राणद झड़ी बरसी तुम्हारे घर वृथा,
तुमने बना पत्थर, बढ़ा दी कोटि तृषितों की व्यथा,
तुम देवताओं के लोक हो मैं कृषक की करुणा कथा ।
मुझको, पतन स्वीकार था!

प्रभु ने बरसता वर दिया, तुमने उसे पत्थर किया,
माना कि पंकिलता बची माना कि जगमग जग किया,
तुमको चमक की चाह- मुझको, पंक-पथ-शृंगार था ।
मुझको, पतन स्वीकार था!

तुम जगमगा कर रह गये अपनी विवशता कह गये,
लाचार दीन अधीन तृषितों के इरादे ढह गये,
मैं उच्चता को शत्रु- सबल जगत की मनुहार था ।
मुझको, पतन स्वीकार था!

तुम रोकते हो धार को ? आश्रित जगत-व्यापार को ?
तुम प्रबल गति के शत्रु हो- क्यों रोकते हो ज्वार को ?
मैं चली मूर्छित छोड़; मेरा, प्रलय-घन हुंकार था ।
मुझको, पतन स्वीकार था!

तुम विमल ऊँचों की कथा, मैं करुण दलितों की व्यथा,
तुम कर्महीना 'देवता' मैं गतिमयी, बलि की प्रथा;
जड़ उच्चता में, जन्म मम विद्रोह का अवतार था ।
मुझको, पतन स्वीकार था!

हाँ ठीक, जग तुम पर चढ़े, यह उचित, नर तुम तक बढ़े;
पर यह तुम्हारी उच्चता क्यों शाप मानव पर मढ़े ?
तरलत्व को तरलत्व दूं मेरा कठिन निर्धार था ।
मुझको, पतन स्वीकार था!

रोती रही भू प्यास से, हरिया उठूं, इस आस से,
वह बनी रेगिस्तान 'शीतल-उच्चता' के त्रास से !
मेरा 'भगीरथ' क्रान्तिमय विद्रोह सा उपचार था ।
मुझको, पतन स्वीकार था!
(1927)

10. दृढ़व्रत
बज्र बरसाने दे उन्हें तू खड़ा देखा कर,
फूल बिखराने दे लुभाते हैं लुभाने दे ।

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

गालियाँ सुनाने दे तू आरती उतारने दे,
दण्ड आजमाने दे या चन्दन चढ़ाने दे ।

होवे बनवास कारावास, नर्कवास
पद चूमे अमरत्व उसे पड़ा रह जाने दे,
साँवली सी सूरत को माधुरी सी मूरत को
प्राण बलि जाने दे तू आँखो से न जाने दे ।
(1913)

परिणाम

पंडित माखनलाल चतुर्वेदी का नाम छायावाद की उन हस्तियों में से है जिनके कारण वह युग विशेष हो गया। उस युग के कवि कुदरत को स्वयं के करीब महसूस कर लिखा करते थे। चतुर्वेदी जी की भी कई रचनाएं ऐसी हैं जहां उन्होंने प्रकृति के माध्यम से अपनी भावनाओं को व्यक्त किया है। उनकी रचना पुष्प की अभिलाषा और फूल की मनुहार में उन्होंने एक कुसुम के द्वारा अपनी आंतरित संवेदनाओं को प्रकट किया है जिससे संकेत मिलता है कि वह एक राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति होने के साथ-साथ अपनत्व से आप्लावित व्यक्ति थे। यह एक ऐसे कवि थे जिन्होंने युग की आवश्यकता को पहचाना. यह त्याग और बलिदान में विश्वास करने वाले व्यक्ति थे और इनकी कविताओं में भी यही भाव उमड़ा. अपनी कविताओं के माध्यम से इन्होने देशवासियों को भी त्याग और बलिदान का उपदेश दिया. माखनलाल चतुर्वेदी को राष्ट्रीय भावनाओं से पूर्णतया ओतप्रोत होने के कारण "भारतीय आत्मा" के नाम से भी संबोधित किया जाता है.[7,8]

पुष्प की अभिलाषा…
चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ,
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध
प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर
हे हरि डाला जाऊँ,
चाह नहीं देवों के सिर पर
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ,
मुझे तोड़ लेना बनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक!
मातृ-भूमि पर शीश- चढ़ाने,
जिस पथ पर जावें वीर अनेक!
माखनलाल चतुर्वेदी एक पत्रकार,
निबंधकार, प्रसिद्ध कवि और पत्रिकाओं के संपादक भी थे. लेकिन इनकी छवि कवि के रूप में ही अधिक प्रसिद्ध है.

इनकी कविताओं का संग्रह है:
हिमकिरीटिनी
हिमतरंगिणी
माता
युगचरण
समर्पण
वेणु लो गूंजे धरा

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

इनकी रचना हिम तरंगिणी को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया
इनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएं हैं:

साहित्य देवता: यह इनके भावात्मक निबंधों का संग्रह है
रामनवमी: इसमें प्रभु श्री राम के लिए प्रभु-प्रेम और देश भारत के लिए देशप्रेम को एक साथ चित्रित किया गया है संतोष और बंधन सुख: संतोष और बंधन सुख नामक रचनाओं में गणेश शंकर विद्यार्थी की मधुर स्मृतियों को संजोया गया है.
कृष्णार्जुन युद्ध: कृष्णार्जुन युद्ध नामक रचना में पौराणिक कथानक को भारतीय नाट्य परंपरा के अनुसार प्रस्तुत किया गया है इनकी कहानियों का संग्रह कला का अनुवाद नाम से प्रकाशित हुआ माखनलाल चतुर्वेदी की अधिकांश रचनाओं में राष्ट्र के प्रति राष्ट्र प्रेम की भावना का उल्लेख है. प्रारम्भ में इनकी रचनाएँ भक्तिमय और आस्था से जुडी हुयी थी किन्तु राष्ट्रीय आंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सेदारी के बाद इन्होंने अपनी रचनाओं को राष्ट्र के प्रति समर्पित करना आरम्भ कर दिया.
माखनलाल चतुर्वेदी को 1943 ई० में देव पुरस्कार जो उस दौर का हिन्दी साहित्य का सबसे बड़ा पुरस्कार था दिया गया. हिंदी साहित्य अकादमी पुरस्कार जीतने वाले यह पहले व्यक्ति हैं. हिंदी साहित्य में अभूतपूर्व योगदान देने के कारण माखनलाल चतुर्वेदी को 1959 में सागर यूनिवर्सिटी से डी.लिट् की उपाधि भी प्रदान की गयी. 1963 में भारत सरकार द्वारा पद्मभूषण दिया गया (हालाँकि 10 सितम्बर 1967 ई० को राष्ट्र भाषा हिन्दी पर आघात करने वाले राजभाषा संविधान संशोधन विधेयक के विरोध में माखनलाल जी ने यह अलंकरण लौटा दिया) भोपाल का माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय इन्हीं के नाम पर स्थापित किया गया माखनलाल चतुर्वेदी की रचनाएं हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है इन्होंने अपने ओजपूर्ण भावात्मक शैली में वीर रस से परिपूर्ण कई सारी रचनाएं करके युवकों में जो ओज और प्रेरणा का भाव भरा है उसका राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में बहुत बड़ा योगदान है. राष्ट्रीय चेतना जगाने वाले कवियों में माखनलाल चतुर्वेदी जी का मुर्धन्य स्थान है. हिंदी साहित्य जगत में अपनी साहित्य सेवा के लिए इनको सदैव याद किया जाएगा

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य के ख्यातिप्राप्त कवि, लेखक और पत्रकार पंडित माखनलाल चतुर्वेदी एक महान स्वतंत्रता सेनानी भी थे।उनका नाम छायावाद की उन हस्तियों में से एक है जिनके कारण वह युग और भी विशेष हो गया। इस युग के कवि खुद को कुदरत और प्रकृति के करीब महसूस करते थे और इसी के ओत-प्रोत लिखते थे।

चतुर्वेदी की रचनाएँ भी आपको प्रकृति के करीब ले जाएँगी। हालांकि, उनकी रचनाएँ प्रकृति के साथ-साथ देशप्रेम और देशभक्ति की भावना से भी परिपूर्ण होती थीं। इसलिए उनका एक उपनाम 'एक भारतीय आत्मा' भी पड़ गया था। उन्होंने अपनी लेखनी को अंग्रेज़ों के खिलाफ़ हथियार के तौर पर इस्तेमाल किया था। माखनलाल चतुर्वेदी एक ऐसे लेखक और कवि थे जिनके अंदर राष्ट्रप्रेम कूटकूट कर भरा था. इनकी ख्याति मूल रूप से एक लेखक, कवि या वरिष्ठ साहित्यकार के रूप में हैं लेकिन ये एक स्वतन्त्नता सेनानी भी थे. गुलाम भारत की दुर्दशा को देखकर इनकी आत्मा चीत्कार कर उठी थी. |
उनका जन्म 4 अप्रैल 1889 को मध्य प्रदेश के होशंगाबाद जिले में बाबई नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता का नाम नन्दलाल चतुर्वेदी था जो गाँव के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक थे। प्राइमरी शिक्षा के बाद घर पर ही इन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी, गुजरती आदि भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया।
माखनलाल की लेखन शैली नव-छायावाद का एक नया आयाम स्थापित करने वाली थी. जिनमे भी चतुर्वेदी की कुछ रचनाए "हिम-तरंगिनी, कैसा चाँद बना देती हैं,अमर राष्ट्र और पुष्प की अभिलाषा तो हिंदी साहित्य में सदियों तक तक अमर रहने वाली रचनाएँ हैं, और कई युगों तक यह आम-जन को प्रेरित करती रहेगी. अपनी कुछ कालजयी रचनाओं हिम तरंगिनी, समर्पण, हिम किरीटिनी, युग चरण, साहित्य देवता, दीप से दीप जले, कैसा चाँद बना देती हैं और पुष्प की अभिलाषा की वजह से हिंदी साहित्य में इनको बहुत उच्च स्थान प्राप्त है. इसके अलावा कुछ कविताएं जैसे अमर राष्ट्र, अंजलि के फूल गिरे जाते हैं, आज नयन के बंगले में, इस तरह ढक्कन लगाया रात ने, उस प्रभात तू बात ना माने, किरणों की शाला बंद हो गई छुप-छुप, कुञ्ज-कुटीरे यमुना तीरे, गाली में गरिमा घोल-घोल, भाई-छेड़ो नहीं मुझे, मधुर-मधुर कुछ गा दो मालिक, संध्या के बस दो बोल सुहाने लगते हैं आदि इनको सुप्रसिद्ध कवि साबित करती हैं.[9,10]

IJIRSET

ISSN(Online): 2319-8753
ISSN (Print) : 2347-6710

International Journal of Innovative Research in Science, Engineering and Technology

(A Monthly, Peer Reviewed Journal, Impact Factor: 7.215)

Visit: www.ijirset.com

Vol. 7, Issue 9, September 2018

संदर्भ

1) कविता कोश में माखनलाल चतुर्वेदी
2) एक भारतीय आत्मा यादों के झरोखे से (जागरण)
3) माखनलाल चतुर्वेदी : भारतीय आत्मा (विजयदत्त श्रीधर)
4) bahadur singh.htm स्वाधीनता के असाधारण बिम्ब हैं दद्दा (डॉ° विजय बहादुर सिंह)
5) माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली (गूगल पुस्तक)
6) समय के पाँव (गूगल पुस्तक ; लेखक - माखनलाल चतुर्वेदी)
7) "पत्रकारिता की कालजयी परंपरा" (एसएचटीएमएल). बीबीसी. मूल से 15 अगस्त 2011 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८. । में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
8) ↑ "पंडित माखनलाल चतुर्वेदी". हिन्दिनी. मूल से 7 अक्तूबर 2007 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८. । में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
9) ↑ "माखनलाल चतुर्वेदी : बहुआयामी व्यक्तित्व". वेबदुनिया. मूल (एचटीएम) से 22 दिसंबर 2008 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८. । में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)
10) ↑ "माखनलाल चतुर्वेदी". अनुभूति. मूल (एचटीएम) से 24 मार्च 2009 को पुरालेखित. अभिगमन तिथि २२ दिसंबर २००८. । में तिथि प्राचल का मान जाँचें (मदद)